

नए साल की पहली

नया साल मुबारक! यह दिन यानी नए साल का पहला दिन। हमें पहले से पता होता है कि यह दिन किस दिन आने वाला है। यही तो कैलेंडर का कमाल है। एक रोचक बात यह है कि अलग-अलग संस्कृतियों में नया साल अलग-अलग दिन मनाया जाता है।

हम यदि स्कूल या दफ्तर के कैलेंडर (ग्रेगोरियन कैलेंडर) के अनुसार चलते हैं तो यह दिन 1 जनवरी है। पर भारत और दुनिया के अन्य देशों में आज भी कम-से-कम 40 तरह के कैलेंडर प्रचलित हैं! इतने सारे कैलेंडर होने पर भी इनमें काफी समानताएँ हैं। किसी भी कैलेंडर में दो बातें ज़रूरी होती हैं – साल शुरू कब होगा और एक साल की अवधि कितनी होगी। यह मज़ेदार बात है कि दुनिया के सारे कैलेंडरों में साल की अवधि लगभग बराबर है। इसका कारण यह है कि प्राचीन काल से ही लोग खगोलीय और प्राकृतिक (खासकर खेती सम्बन्धी) घटनाओं के आधार पर ही साल की अवधि का अनुमान लगाते आए हैं। जैसे – आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और तारों का सफर, ऋतुओं का बदलाव, बरसात का आगमन इत्यादि।

और भी मज़ेदार बात यह है कि प्राचीन काल की अधिकांश सभ्यताओं में नया साल बसन्त ऋतु से शुरू होता था। बसन्त नए जीवन का प्रतीक है। इस मौसम में ज़्यादातर पेड़-पौधों में फूल आने लगते हैं। जैसे 4,000 साल पहले की मेसोपोटेमिया सभ्यता (आज का इराक) में नया साल बसन्त के नवचन्द्रोदय



से शुरू होता था। बिहु (असम का बसन्त त्यौहार), बैसाखी (पंजाब में फसल कटाई का त्यौहार, 13-14 अप्रैल), चैती चाँद (सिन्धी समुदाय का नया साल, मार्च-अप्रैल), गुड़ी पड़वा (महाराष्ट्र में नया साल, मार्च-अप्रैल), नवरोज़ (पारसी समुदाय समेत ईरान, ईराक, तुर्की और मध्य एशियाई देशों का नव वर्ष), पोइला बैसाख (पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश का नव वर्ष), पुतान्डू (तमिल लोगों का नया साल), उगाडी (तेलुगू व कन्नड़ लोगों का नया साल), विशु (केरल में कटाई का त्यौहार) सभी बसन्त के आगमन पर होते हैं।

कुछ भारतीय कैलेंडरों में दीवाली को नया साल माना जाता है। प्राचीन मिस्र में नया साल जुलाई के तीसरे सप्ताह से शुरू होता था जब नील नदी में पानी का स्तर बढ़ने लगता था। उस वक्त लोग बोनी की तैयारी में लग जाते थे।

वैसे तो कैलेंडर किसी न किसी प्राकृतिक घटना के बार-बार होने के आधार पर बनाए जाते रहे हैं, मगर इतिहास बताता है कि लोग इन प्राकृतिक और खगोलीय घटनाओं को अपनी धार्मिक मान्यताओं से भी जोड़ते आए हैं। आम तौर पर तीन तरह के कैलेंडर प्रचलित हैं – सूर्य की गति पर



अफगानिस्तान: साले नौ मुबारक
अरब देश: कुलम वा अन्तुम बिखैर, अन्तुम सलीमौन
आन्ध्रप्रदेश: नूतन समवत्सरा शुभकानकशालु
बंगाल: शुवो नबो बर्षा
चीन: जिन नियान कुअइ ले
चेक गणतंत्र: स्टास्नी नोवी रोक

डेनमार्क: गोड न्यार
नेदरलैण्ड: गेलुकिग नियु जार
फिनलैण्ड: ओनेलिस्टा ऊटा बुओटा
फ्रांस: वॉने अनेई
जर्मनी: गुटेस न्यू जार
यूनान: कैनूर्मियाँस क्रोनोंस

आधारित, चाँद की कलाओं पर आधारित और इन दोनों के मिले-जुले अवलोकनों पर आधारित।

चन्द्र और सौर कैलेंडर

सौर कैलेंडर इस बात पर आधारित है कि आकाश में सूर्य एक निश्चित समय में चक्कर लगाता प्रतीत होता है। सूर्य की इसी आभासी गति के कारण ऋतुएँ भी बदलती हैं। साल की शुरुआत उस दिन से होती है जब दिन और रात की लम्बाई बराबर होती है (मार्च 21-22)। एक सौर वर्ष में लगभग 365.25 दिन होते हैं। ग्रेगोरियन, जूलियन, फारसी, मिस्र आदि कैलेंडर सौर चक्र पर आधारित हैं। ये कैलेंडर ऋतुओं से भी मेल खाते हैं।

चन्द्र कैलेंडर चाँद की कलाओं पर आधारित है और ऋतुओं के चक्र से तालमेल नहीं रखता है। हर साढ़े 29 दिन में चाँद पृथ्वी का एक चक्कर काटता है। दो पक्षों की इस अवधि को चन्द्र मास कहते हैं। यह जानना तुम्हें रोचक लगेगा कि उर्दू में चाँद को माह कहते हैं और महीना, मास बगैरह शब्द इसी से बने हैं। 12 चन्द्र मास का एक चन्द्र वर्ष बनता है जिसकी कुल अवधि लगभग 354 दिन है।

सौर और चन्द्र वर्षों में लगभग 11 दिन का अन्तर होता है। इस तरह तीन वर्षों में यह अन्तर एक महीने का हो जाता है। सौर और चन्द्र वर्षों में तालमेल बिठाने के लिए हर दूसरे या तीसरे साल में एक अतिरिक्त चन्द्र मास (अधिक मास) इसीलिए जोड़ा जाता है।

1 जनवरी और नया साल

1 जनवरी का धर्म या ऋतुओं से कोई नाता नहीं। फिर इस दिन को नए साल से कैसे जोड़ा गया? इसके पीछे एक लम्बी कहानी है। बात प्राचीन रोमन साम्राज्य से शुरू होती है। वहाँ चन्द्र कैलेंडर प्रचलित था और साल का पहला दिन 15 मार्च को माना जाता था। एक साल में मात्र दस माह होते थे और दिन होते थे 304। जनवरी और फरवरी महीनों का

नामोनिशान न था। साल लगभग 25 दिसम्बर को खत्म होता था। इसके बाद के 61 दिनों को गिना नहीं जाता था। ये सर्दी और छुट्टी के दिन हुआ करते थे। इनके बीत जाने के बाद नया साल शुरू किया जाता था।

लगभग 2700 साल पहले रोम के सम्राट ने तय किया कि साल का पहला दिन 1 जनवरी होगा। सम्राट ने साल में दो अतिरिक्त माह (कुल 51 दिन) जोड़े जिनमें जनवरी शामिल था। यह नाम जैनस नाम के द्विमुखी देवता से लिया गया था जिसका एक चेहरा आगे देखता था (नए साल की ओर) और दूसरा पीछे (बीते साल की ओर)। इससे साल में 355 दिन हो गए। साल और ऋतुओं के बीच सामंजस्य बैठे इसलिए एक तेरहवाँ महीना जोड़ा गया। इसमें 22 या 23 दिन होते थे। यह महीना दो या तीन सालों में ज़रूरत के हिसाब से जोड़ा जाता था। इसका कोई नियम नहीं था – जब भी ऋतुएँ गड़बड़ होने लगतीं, एक महीना जोड़ देते थे। इसलिए गड़बड़ियाँ होने लगीं। साल समय से पहले ही शुरू हो जाता था। यानी अभी बसन्त ऋतु आई ही नहीं है मगर कैलेंडर के हिसाब से नया साल आ धमकता।

छोटे-मोटे परिवर्तनों के साथ यह कैलेंडर करीब 650 साल



गुजरात: नूतन वर्षाभिनन्दन
हिन्दी भाषी प्रान्त: नया साल मुबारक
हॉन्गकॉन्ग: सुन लीन फाइ लोक
इजराइल: शाना टोबा
इथियोपिया: मेलकम अदिस अमेट यहूनलीबो
हंगेरी: बॉल्बॉग उय ऐवेट

इंडोनेशिया: सेलामत ताहुन बारु
इटली: फेलीस अन्न न्युओवो
इराक: सनाह जदीदाह
ईरान: साले नौ मुबारक
उर्दू भाषी देश: नया साल मुबारक हो
जापान: आकेमाशीटे ओमेडेटो गोजाइमासु



तक चला। साल की शुरुआत के खिसकते जाने के कारण 47 ईसा पूर्व का साल जिस मौसम में शुरू होना चाहिए था उससे 90 दिन पहले शुरू हो गया। मिस्र के खगोलविद् सोसिजिनीस की सलाह पर जूलियस सीज़र ने वहाँ लीप वर्ष प्रणाली शुरू की। साल की औसत लम्बाई 365¼ दिन होती है। सोसिजिनीस का सुझाव था कि साल में 365 दिन हों और हर चौथे साल एक दिन जोड़ दिया जाए ताकि ¼ दिन का हिसाब ठीक हो जाए। महीनों के दिन भी तय कर दिए गए। वे आज जितने ही थे। इस कैलेण्डर को जूलियन कैलेण्डर कहते हैं।

जूलियन कैलेण्डर 45 ईसा पूर्व में लागू हुआ था। 650 वर्षों में गड़बड़ हो चुके महीनों को उनके सही मौसम में लाने के लिए इस साल के फरवरी महीने के अन्त में 23 दिन और नवम्बर और दिसम्बर के बीच 67 अतिरिक्त दिन जोड़े गए। इस तरह यह एक साल 445 दिनों का हो गया। इसे "गफलत का साल" कहा जाता है।

जूलियस सीज़र चाहते थे कि नया साल 22 दिसम्बर से शुरू हो जिस दिन सबसे लम्बी रात और सबसे छोटा दिन होता है। लेकिन लोगों को यह ठीक न लगा। 45 ईसा पूर्व में अमावस्या 1 जनवरी के दिन आने वाली थी, जिसे शुभ माना जाता है। इस तरह 1 जनवरी साल का पहला दिन बना।

हालांकि जूलियन कैलेण्डर ने काफी हद तक ऋतुओं और साल की अवधि का तालमेल बना दिया था मगर अभी कुछ समस्याएँ बच गई थीं। जैसे साल की लम्बाई को जूलियन कैलेण्डर में 365.25 दिन माना गया है मगर सौर वर्ष की वास्तविक अवधि 365.2422 दिन है। अर्थात् जूलियन कैलेण्डर का साल वास्तविक साल से 0.0078 दिन बड़ा था। इसके कारण कई सालों में साल और ऋतुओं के बीच तालमेल फिर गड़बड़ होने लगता था। इस समस्या को सुलझाने के लिए पोप ग्रेगोरी ने गणितज्ञों और खगोलविदों की एक समिति बनाई। इस समिति ने सुझाव दिया कि हर चौथे वर्ष में फरवरी माह में एक अतिरिक्त दिन जोड़ा जाए मगर हर 400वें वर्ष में फरवरी को 28 दिन का ही रखा जाए। पोप ने यह सुझाव स्वीकार किया और एक नया कैलेण्डर तैयार करवाया।

पोप का यह कैलेण्डर ग्रेगोरियन कैलेण्डर के नाम से प्रचलित हुआ। अगले 200-300 सालों में ईसाई धर्म को मानने वाले युरोपीय देशों ने धीरे-धीरे यह कैलेण्डर अपना लिया। बाद में गैर ईसाई देशों ने भी इसे अपना लिया।

इस कैलेण्डर में सुविधा यह है कि इसमें मौसम और कैलेण्डर का तालमेल लम्बे समय तक बना रहेगा। जब 1582 में यह कैलेण्डर लागू हुआ उस समय तक वास्तविक ऋतुएँ कैलेण्डर से 10 दिन पहले आने लगी थीं। इसलिए 1582 में 5 अक्टूबर को 15 अक्टूबर माना गया था।

आज ग्रेगोरियन कैलेण्डर दुनिया के लगभग सभी देशों का आधिकारिक कैलेण्डर बन गया है।

हैप्पी न्यू ईयर, 2008



कोरिया: सेहे बोकमानी बाटेयुसेवो
कर्नाटक: होसा वर्शुधा शुभशयागुलू
केरल: पुतुवर्शरा आशामसकल
मलेशिया: सेलामत तहुण बहु
महाराष्ट्र: नवीन वर्शांची शुभेच्छा

नाइजीरिया: बरका दा साबुवर शेकारा
नॉर्वे: गोंड न्यार
नेपाल: नवो वर्शा को शुवोकामना
फिलिपीन्स: मनीगोंग बगोंग ताओन
पोलैण्ड: सेजेरिलवेगो नोवेगो राकू

पंजाब: नवें साल दीआं वधाइयाँ
रूस: नोविम गोदोम
स्पेन: फेलीज अन्नो न्यूएचो
स्वीडन: गोट न्यार
सिन्ध: नयो साल मुबारक होजे



मिस्रवासियों का साल की लम्बाई मापने में बड़ा योगदान है। वहाँ साल को 360 दिनों का माना जाता था। उन्होंने साल को तीन मौसमों में बाँटा – बाढ़, बुआई और कटाई का समय। हर मौसम में चार महीने थे। लेकिन जल्द ही उन्होंने पाया कि 365 दिन साल की सही लम्बाई नहीं दर्शाते हैं। इसका एक प्रमुख आधार था सिरियस तारे का लगातार अवलोकन।

सिरियस नाम के तारे को मिस्र में एक देवी से जोड़कर देखा जाता था। एक पुजारी उसके उगने को ध्यान से देखा करता था। पूर्वी क्षितिज पर यह तारा किस समय उगता उसे वह नोट करता। हर दिन सूरज उगने के समय आकाश में उसकी स्थिति पर भी उसकी नज़र बनी रहती। उसने पाया कि धीरे-धीरे सिरियस सूरज उगने के पहले ही क्षितिज पर दिखने लगा है। और उसके बाद तो हर दिन वह सूरज उगने तक आकाश में काफी ऊँचाई पर दिखता है।

लगभग एक साल बाद वह पश्चिमी क्षितिज पर सूरज डूबने के वक्त दिखता। यहाँ यानी पश्चिमी क्षितिज पर भी वह कुछ ही दिन दिखता, फिर गुम हो जाता। मिस्रवासियों ने लम्बे समय तक उसका अवलोकन किया और पाया कि 365¼ दिन बाद वह तारा फिर से दिन उगने के साथ क्षितिज पर नज़र आता है।

अगर मिस्रवासी अपने कैलेण्डर में इस बदलाव को किसी तरह दर्ज कर लेते कि एक साल में 365¼ दिन होते हैं तो उनका कैलेण्डर सही के एकदम करीब होता।

चुक मुंग नाम मोड़

श्रीलंका: सुभ अलुत अवरुधक वेवा
तमिल नाडु: एनिया पुतान्दू
नलवजतुककल
थाइलैण्ड: सवाडी पी माइ
वियतनाम: चुक मुंग नाम मोड़



चित्र: अजय राव



मच्छर पहलवान

बात की बात

खुराफात की खुराफात

बेरिया का पत्ता

सवा सत्रह हाथ

उसपे ठहरी बारात

मच्छर ने मारी एड़

तो टूट गया पेड़

पत्ता गया मुड़

बारात गई उड़